Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 6 | JUNE 2019

हिंदी भाषा के विकास में हिंदी सिनेमा का योगदान

अभिषेक त्रिपाठी [1]

[1] शोधार्थी, प्रदर्शनकारीकला विभाग (फ़िल्म एवं थियेटर), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा।

ABSTRACT:

हिंदी सिनेमा अपने विस्तृत आयामों के साथ न सिर्फ़ भारत में, अपितु विश्व के अनेक देशों में अपनी पहुँच कायम कर चुका है। अपने मनोरंजन रूप में यह देश-परदेश हर जगह लोकप्रिय है। हिंदी सिनेमा की भाषा आम बोलचाल वाली व्यावहारिक हिंदी है, जिसमें आवश्यकतानुरूप अंग्रेज़ी तक के शब्दों का प्रयोग आसानी से दिखाई पड़ जाता है। हिंदी सिनेमा की भाषा ने साहित्यिक हिंदी की जटिलता के सामने हिंदी का एक सहज, सरल रूप प्रस्तुत किया है। यद्यपि बहुत बार यह रूप हिंदी भाषा को विकृत भी करता है, तथापि भाषा के विस्तार की दृष्टि से देखा जाए तो इसने हिंदी भाषा के दायरे को विस्तार भी दिया है। इस शोध आलेख में हिंदी भाषा के विकास में हिंदी सिनेमा के संबद्ध योगदान के पड़ताल की कोशिश की गई है, ताकि आगे हिंदी भाषा के उत्थान में हिंदी सिनेमा की भूमिका को और सशक्त बनाया जा सके।

KEYWORDS:

हिंदी भाषा, हिंदी सिनेमा

हिंदी के विकास का जमीनी धरातल पर मूल्यांकन करें तो एक चीज़ स्पष्ट हो जाती है कि तमाम कोशिशों के बावजूद हिंदी आज भी चुनौतियों से जूझ रही है। हिंदी के विकास हेतु जो भी संस्थाएं और व्यक्ति विशेष कार्यरत हैं, वे हिंदी को उस मुकाम तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं, जिस मुकाम का स्वप्न वे स्वयं हिंदी प्रेमी के रूप में देख रहे हैं। आज भी भारत में अंग्रेजी की दिवानगी बरकरार है और यह अंग्रेजी के बढ़ते साम्राज्य के प्रकोप में निरंतर बढ़ती ही जा रही है। ज्ञान, अवसर और सेवाओं की पर्याप्त उपलब्धता ने भी हिंदी के बरख्स अंग्रेजी के पक्ष में सकारात्मक माहौल पैदा किया है। यद्यपि यह सच है कि बहुत सारे संस्थान और ढ़ेरों व्यक्ति विशेष हिंदी की सेवा में शिद्दत के साथ लगे हैं और उन्होंने हिंदी को लेकर अलख भी जगाया है और उनके योगदान को किसी भी कीमत पर भुलाया नहीं जा सकता; तथापि मूल चिंता यह है कि इनका अलख अंग्रेजी की चमक और बाज़ार में उसके बढ़ते प्रभाव के कारण परंपरा की ही पोषक नज़र आ रही है। जब भी कोई क्षेत्र विशेष की चैहद्दी को लाँघकर भारत में ही अपनी दृष्टि फेरता है तो उसे हिंदी काफी पीछे छुटती नज़र आती है और इस पिछड़ेपन की छाया उसे भी अपने उदर में समाहित कर लेती है।

इसे दुर्भाग्य कहें या मौके की प्रतिकुलता कि हिंदी का जो रूप साहित्य और ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों में प्रस्तुत किया जा रहा है और जिसकी पैरोकारी बहुधा उसके शुभचिंतकों द्वारा की जाती है, वह इतनी शुद्धतावादी हो जाती है कि बहुधा लोग इस तरह की हिंदी से मंत्रमुग्ध तो होते हैं परंतु उसे व्यावहारिक धरातल पर पंडित-पंडिताई और महाज्ञानी बाबा की हिंदी कह आगे बढ़ जाते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु की तरह होती है; और कुछ समय बाद बस ऐसे सामान के रूप में, जो सुंदर रहकर भी अनुपयोगी हो!ऐसे में हिंदी के उस व्यावहारिक और फैलते रूप की चर्चा अनिवार्य हो जाती है जो आज बॉलीवुड (हिंदी सिनेमा) के कारण भारत में अंग्रेजी के विशाल प्रवाह के बाद भी अपना अस्तित्व कायम किये हुए है। इसमें कहीं कोई दो राय नहीं है कि हिंदी फ़िल्में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महती भूमिका का निर्वाह कर रही हैं; और यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी फ़िल्मों के जरिये हिंदी भाषा का यह प्रसार अत्यंत सहज, समझने योग्य, दिलचस्प, संप्रेषणीय और ग्राह्य है।

यदि भारत में कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों की सूची तैयार करें जिसने लोगों के मन-मानस पर सबसे ज़्यादा अपना प्रभाव स्थापित किया है तो सिनेमा उस सूची में प्रमुख हस्ताक्षर के तौर पर उभरेगा। यद्यपि भारत के संदर्भ में जब भी सिनेमा की बात की जाती है तो लोगों को बहुधा ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय सिनेमा मतलब बॉलीवुड अर्थात मुम्बईया सिनेमा अर्थात हिंदी सिनेमा..... परंतु वस्तुस्थिति कुछ और ही है। भारतीय सिनेमा का फलक काफी विस्तृत और व्यापक है जो तमाम क्षेत्रीय भाषाओं में फल-फुल रही और वहाँ की विशिष्टताओं को सेल्यूलाईड पर उकेरती उन तमाम फ़िल्मों को भी अपने विशाल दायरे में समाहित कर लेता है जो तमिल, मराठी, बंग्ला, मलयालम, तेलुगू, भोजपुरी आदि भाषाओं में संबंधित भाषा क्षेत्रों में प्रदर्शित हो रही हैं। सरल और सपाट शब्दों में कहें तो 'भारतीय सिनेमा का संसार काफी व्यापक है और मुम्बई में बनने वाला सिनेमा उसका एक अंश मात्र. . . .; बावजूद इस तथ्य के मुम्बईया सिनेमा ने अपनी भाषा, विशालकाय दर्शकों में बनी खुद की पैठ और स्वयं द्वारा गढ़ी जाने वाली नित नये-नये प्रतिमानों की बदौलत भारतीय सिनेमा के मुख आवरण के रूप में स्वयं को स्थापित कर लिया है। यही कारण है कि व्यवहार में अक्सर लोग मुम्बईया सिनेमा को ही समग्र भारतीय सिनेमा मानने की भूल कर बैठते हैं!'

हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा पर गौर फरमाएं तो इसके वजूद में आने से लेकर अब तक अनेक दिलचस्प पड़ाव दृष्टिगत होते हैं। विकास यात्रा की एक अनूठी दास्तान इससे जुड़ी हुयी है। भारी-भरकम दर्शक संख्या वाला हिंदी सिनेमा उतार-चढ़ाव के कई आयामों का सामना करते हुए आज इस पड़ाव पर है कि इससे उत्पन्न रोशनी की आभासुदूर देशों में भी देखी जा सकती है।

फ़िल्मों में हिंदी भाषा

हिंदी फ़िल्म में जुड़ा हिंदी शब्द सिद्धांततः उसके द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा का द्योतक है, परंतु हिंदी फ़िल्म में हिंदी शब्द जुड़ा होने के कारण उससे यह अपेक्षा कि वह शुद्ध हिंदी की हिमायती है और उसमें संस्कृतनिष्ठ शुद्ध हिंदी की छटा नज़र आएगी, तकलीफदेह हो सकती है। 'हिंदी फ़िल्में हिंदी भाषा में होती है' यह धारणा आम होने के बावजूद हिंदी फ़िल्मों की भाषा भाषाई आग्रह के किसी खास खांचे में कभी नहीं बंधी। शुरूआती हिंदी फ़िल्में हिंदुस्तानी भाषा का प्रयोग करती थीं, जो हिंदी और उर्दू का मिश्रण हुआ करती थी, पर समय के साथ निरंतर इसके द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा में भारी बदलाव महसूस किया जा सकता है। सामान्यतया हिंदी फ़िल्मों की भाषा उत्तर और मध्य भारत में बोली जाने वाली

दिन-प्रतिदिन की भाषा है जिसमें उच्चारण से लेकर शब्दों के घुमाव तक में क्षेत्रीयता अभिव्याप्त है।

फ़िल्म निर्माण और प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य जनसामान्य का मनोरंजन है; और मनोरंजन का यह उद्देश्य तभी फलीभूत होता है, जब उसमें जटिलता न हो। भाषा के स्तर पर भी यह बात लागू होती है। फ़िल्मों की भाषा का समान्य, सरल होना अनिवार्य है। फ़िल्मों के संवाद का अपना एक आधार है; यह चरित्रों की स्थिति, परिस्थिति तथा कथा के देशकाल और वातावरण से निर्धारित होती है। एक ही फ़िल्म में अलग-अलग चरित्रों की हिंदी अलग-अलग हो सकती है। अपढ़ की हिंदी दूसरी होगी, पढ़े-लिखों की दूसरी। फ़िल्म यथार्थ जीवन की भाषा का अनुकरण करती है, विविधता और सरलता जिसकी मुख्य पहचान है।

फ़िल्मों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी की व्यापक शैलियों को डॉ. मनमोहन ने निम्न रूप में वर्गीकृत किया है-

√मानक हिंदी।

√हिंदी भाषी क्षेत्रों की विविध बोलियाँ, यथा-ब्रज, बुंदेली, भोजपुरी, अवधी, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी आदि।

√प्रादेशिकता और स्थानीयता के रंग में रंगी हिंदी के विविध रूप, जैसे- बिहारी हिंदी, मराठी लहजे की मुंबइया हिंदी, तमिल लहले की मद्रासी हिंदी, मलयालम लहजे की मलयालयी हिंदी, तेलुगु लहजे की हैदराबादी हिंदी, बंगला लहजे की कलकतिया हिंदी, गुजराती लहजे की हिंदी, मारवाड़ी हिंदी, गोवन हिंदी, हरियाणवी हिंदी, पंजाबी हिंदी आदि।

√पहाड़ी हिंदी- नेताल, गढ़वाली, कुमाऊँनी, कश्मीरी।

√ परसियन हिंदी और एंग्लो इंडियन हिंदी।

√हिंग्लिश- हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण।

हिंदी फ़िल्म की सबसे बड़ी खूबी यह है कि अपनी भाषा को लेकर इसका रूख बड़ा लचीला रहा है। अपनी फ़िल्मों को भारत के सारे कोने में बेचने के लिए इससे जुड़े निर्माताओं के लिए यह आवश्यक भी है कि वे भाषा के शुद्धता या विशिष्टता के प्रति आग्रही न बनें। दिलचस्प बात यह है कि शुद्ध, संस्कृतनिष्ठ हिंदी की बरख्श फ़िल्मों में प्रयुक्त सरल, ठेठ और मिश्रित हिंदी भाषा के नये कलेवर को लोगों ने सहजता के साथ स्वीकार भी कर लिया है। कुछ लोगों के लिए शुद्ध हिंदी आज भी बेहद जटिल है और वे इसके प्रयोग को परंपरा के संवाहक के रूप में देखते हैं। यहाँ तक कि हिंदी में शुद्धता लाने की बात उनकी दृष्टि में भाषाई वर्चस्व स्थापित करने का एक प्रयास है। ऐसे में हिंदी फ़िल्मों में मौजूद इसतरह की हिंदी उन्हें काफी रास आती है।

भारत में ही गैर हिंदी भाषी क्षेत्र यथा तमिलनाडु में जहाँ हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने के खिलाफ काफी विरोध प्रदर्शन हुआ वहाँ भी हिंदी फ़िल्मों ने भाषा परिवर्तन (डबिंग) के वगैर ही बॉक्स-ऑफिस पर काफी धूम मचाया। भारत में बहुत से गैर हिंदी भाषी क्षेत्र ऐसे भी हैं जहाँ तमाम दकियानूस राजनीति की वजह से कुछ राजनीतिक संगठन हिंदी फ़िल्मों के प्रदर्शन पर रोक लगवाते रहते हैं। कुछ वर्षों पूर्व मणिपुर में घटित मामले को इस संदर्भ में देखा जा सकता है, परंतु यह हिंदी फ़िल्मों की दिवानगी ही है कि वहाँ भी लोग चोरी-चुपके अपने घरों में सीडी, डीवीडी और इण्टरनेट की मदद से हिंदी फ़िल्मों का रसापान करते ही रहे।

भारत के गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी हिंदी भाषा टूटे-फूटे रूप में ही सही, हिंदी फ़िल्मों की वजह से ही अपना अस्तित्व कायम कर पायी है। हिंदी सिनेमा का भारत के लिए सबसे बड़ा योगदान यही है कि इसने पूरे देश के लिए एक जोड़ने वाली भाषा सृजित की है जो पूर्वोत्तर भारत में समझे जाने के साथ दक्षिण भारत में भी समझी जा सकती है। हिंदी सिनेमा ने हमें लोगों की भाषा दी है। यह न तो साहित्यिक या सरकारी हिंदी है और न साहित्यिक या सरकारी उर्दू; हर कोई इसे समझ-बूझ सकता है।

हिंदी फ़िल्में विदेशियों को भी हिंदी सिखाने में मददगार साबित हो रही हैं। भारत के बाहर बसने वाले उन लोगों के लिए जो हिंदी नहीं बोल सकते लेकिन बॉलीवुड फ़िल्मों के जबर्दस्त फैन हैं, अरूण कृष्णन नामक एक लेखक ने बॉलीवुड फ़िल्मों के जरिये हिंदी सीखने की कम्प्यूटराइज्ड प्रविधि 'लर्न हिंदी फ्राम बॉलीवुड मूवीज' भी खोज निकाली है। यह तकनीकी 2006 में लांच हुई थी और आज हर माह इसके 2000 डाउनलोड हो रहे हैं।

यदि हिंदी फ़िल्मों के गानों की बात की जाए तो इसने दो कदम आगे बढ़कर हिंदी भाषा के फैलाव में अपना योगदान दिया है। भारत की तमाम भाषाई, भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बीच इन गानों ने संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरो दिया है। हिंदी फ़िल्मों का गाना, संगीत पूरा देश साझा करता है। जब हम हिंदी सिनेमा की बात करते हैं तो सबसे पहले उससे जुड़े गीत और नृत्य का ही ख्याल आता है। सुर वाले तो सुर वाले, यहाँ तक कि बेसुरे भी अक्सर उसके बोल को गलत-सही गुनगुना ही लेते हैं। कहा जा सकता है कि लगभग पूरे भारत में लोग हिंदी फ़िल्मों के संवादों के उद्धरण और गानों का प्रयोग कर हिंदी को और ज्यादे आकर्षक और आपसी संवाद का नया माध्यम बनाते जा रहे हैं। अंग्रेजी संस्कृति के इस दौर में भी यदि नई पीढ़ी हिंदी भाषा के साथ अपने तार जोड़ पा रही है तो उसका एक बड़ा कारण हिंदी फ़िल्म और उसके गानों को माना जा सकता है। वे लोग जिन्हें ठीक से हिंदी लिखनी, पढ़नी और बोलनी भी नहीं आती वे भी हिंदी फ़िल्मों को देखते हैं और भरसक समझते हैं।

फ़िल्मों के जरिये भाषा के फैलाव के पीछे बहुत से मनोवैज्ञानिक सिद्धांत कार्य करते हैं। दृश्यों का मानव मस्तिष्क पर प्रभाव ज्यादा होता है। फ़िल्में सिर्फ मौखिक भाषा को साथ लेकर नहीं चलतीं अपितु मूलतः दृश्य विधा होने के कारण उसमें दृश्य ही मूल होते हैं। हिंदी फ़िल्मों की दृश्य भाषा बेहद सशक्त और संप्रेषणीय है। बहुत बार वह इतनी पर्याप्त होती है कि उससे जुड़ी मौखिक भाषा को न जानने-समझने वाला भी उसे पूरा समझ लेता है और दृश्यों से जोड़ते हुए उससे जुड़े शब्द और भाषा की समझ विकसित करने लगता है। कहा जा सकता है कि बहुधा फ़िल्मों के जरिये भाषा को लेकर समझ बनने लगती है। इस तरह हिंदी फ़िल्मों के जरिये आसानी से गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों तक भी हिंदी भाषा अनायास पहुँच गयी। यह अन्य तरिके से बेहद मुश्किल (भाषाई राजनीति के इस दौर में लगभग असंभव) था।

हिंदी फ़िल्मों ने हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में भी योगदान दिया है। वे लोग जो निरक्षर हैं या हिंदी के साहित्य को पढ़ नहीं पाते, उन तक भी हिंदी फ़िल्मों ने हिंदी साहित्य की कथाओं को चित्रपट पर उकेर कर पहुँचा दिया है। हिंदी साहित्य की ढ़ेरों कृतियों पर फ़िल्में बन चुकी हैं। यथा- तीसरी कसम, देवदास, तमस आदि।

उपर्युक्त वर्णन का यह कदापि मतलब नहीं कि हिंदी सिनेमा और इसके भाषाई पक्ष की खामियों को दरकिनार किया जा रहा है; परंतु जहाँ तक हिंदी के प्रचार प्रसार और उसके सरलीकरण का सवाल है हिंदी सिनेमा का योगदान महत्वपूर्ण है, इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता।

दुनिया की कोई भी भाषा तभी तक अपना अस्तित्व कायम रख सकती है जब तक उसमें अपने रूप-स्वरूप को बदलने का माद्दा हो। बहुत बार बदलते सामाजिक परिवेश में किसी भी भाषा के लिए इसतरह का बदलाव अपरिहार्य हो जाता है। किसी भाषा की सक्षमता इस बात में ही है कि वह बदलावों को समझने और लोगों को समझाने में समर्थ हो। भारत राष्ट्र की समसामयिक सांस्कृतिक, सामाजिक, कलात्मक और तकनीकी जरूरतों को समझते हुए बॉलीवुड की फ़िल्मों के जरिये हिंदी भाषा नये कलेवर में हमारे सामने आयी है।

अलग-अलग भाषाओं को समझने और उनके साथ संवाद कायम करने की क्षमता के वगैर आज के सामाजिक और व्यावसायिक जीवन दोनों ही कठिन हैं। तकनीकी के इस युग में जब बहुत से अंग्रेजी शब्दों का सटिक और सहज हिंदी पर्याय नहीं है तो अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग बहुधा जरूरी भी हो जाता है। ऐसे में यदि फ़िल्म जिसे समाज का दर्पण कहा जाता है इस तरह के भाषाई घोल का ही निरूपण चित्रपट पर कर रहा है तो मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई खामी है। बहरहाल अब आवश्यकता इस बात की है कि बॉलीवुड के हिंदी के विकास में दिये गये योगदान को बड़े मंच पर पहचान देकर उसे आगे और बेहरत करने के लिए अभिप्रेरित किया जाये और उसकी सरलता, व्यावहारिकता से सबके लेते हुए हम सब भी हिंदी के विकास की दिशा में दमखम के साथ आगे बढ़ें।

REFERENCES

1. नकवी , हेना. (2010). पत्रकारिता एवं जनसंचार. आगरा: उपकार प्रकाशन.

2. दिलचस्प. (2009). हिंदी सिनेमा के सौ वर्ष. नई दिल्ली: भारतीय पुस्तक परिषद.

3. सिन्हा, प्रसून. (2006). भारतीय सिनेमा… एक अनंत यात्रा. दिल्ली: श्री नटराज प्रकाशन.

4. पारख, जवरीमल्ल. (2006). हिन्दी सिनेमा का समाजशास्त्र. नई दिल्ली : ग्रंथ शिल्पी.

5. गगनांचल, जुलाई-अक्टूबर 2015